असहिष्णुता के स्वर

माधवैया कृष्णन

एक अच्छा पड़ोसी हूँ। इस भीड़भाड़ वाले शहर में, जो हर तरफ़ अन्य मनुष्यों के घरों से घिरा हुआ है, वहाँ मैं हर तरह से सुरक्षित हूँ। विशेष रूप से समय-समय पर मेरे चारों ओर होने वाले हंगामों पर मैं कोई ध्यान नहीं देता हूँ। मुझे लगता है कि ये यहाँ जीवन के आगे बढ़ने के संकेत हैं, ठीक वैसे ही जैसे ट्राम (trams) के आगे बढ़ने के कारण पटरियों पर झनझनाहट होती है और मैं इसके लिए बिल्कुल भी जिज्ञासु नहीं रहता। लेकिन शुक्रवार की सुबह मैं विविध और लगातार आते शोर से जाग गया और उत्सुकतावश पीछे जाकर दीवार के उस पार देखने लगा।

यह कोलाहल पूर्व की ओर मेरे पड़ोसी के परिसर में लगे एक कैसिया (Cassia) के पेड़ से आ रहा था। पेड़ के चारों तरफ़ और उसकी ऊपरी शाखाओं पर बड़ी संख्या में कौवे और लाल चोंच वाले तोते इकट्ठे हो गए थे। वे गोल-गोल चक्कर लगा रहे थे, बैठ रहे थे और फिर से चक्कर लगा रहे थे, बार-बार चिल्ला रहे थे और वे यह सब किसी ऐसे जीव के लिए कर रहे थे जो पेड़ के बीचों-बीच सिकुड़ा हुआ स्थिर बैठा हुआ था। वह पत्तों और फूलों से लगभग पूरी तरह से छिपा हुआ था - वह बड़ा लग रहा था, जो भी था, वह ज़ाहिर तौर पर यह जानता था कि पत्तियों के पीछे ही थोड़ी शान्ति थी। मैंने प्रदर्शनकारियों की एक त्वरित गणना की, क्योंकि जिस पर उनका ध्यान केन्द्रित था वह मेरे लिए अदृश्य था। कौवे (मुख्य रूप से भूरे गर्दन वाले) जो अन्दर और बाहर निरन्तर उड़ रहे थे, वे इतने अधिक थे कि गिनना मुश्किल था, लेकिन लगभग दो दर्जन तो होंगे ही और वहाँ 17 तोते थे। यह एक आश्चर्यजनक संख्या थी, क्योंकि इतने सारे तोते हमारे आस-पड़ोस में नहीं थे, न ही यहाँ रहते थे और मैंने नहीं सोचा था कि इस इलाक़े में इतने सारे होंगे।

मैं कुछ मिनटों तक यह प्रदर्शन देखता रहा, लेकिन जिसके कारण यह सब हो रहा था उसकी पहचान का कोई सबूत नहीं मिला। मैंने अनुमान लगाया कि यह एक बड़ा उल्लू है जो ग़लती से यहाँ आ गया है। फिर वह पक्षियों की नज़रों और उनके चीखने-



चित्र : इसके ख़िलाफ़ प्रदर्शन किया जा रहा था।
Credits: Bonnet monkey, Pixabay. URL: https://pixabay.com/photos/bonnet-macaque-macaca-radiata-371618/. License: CC0.

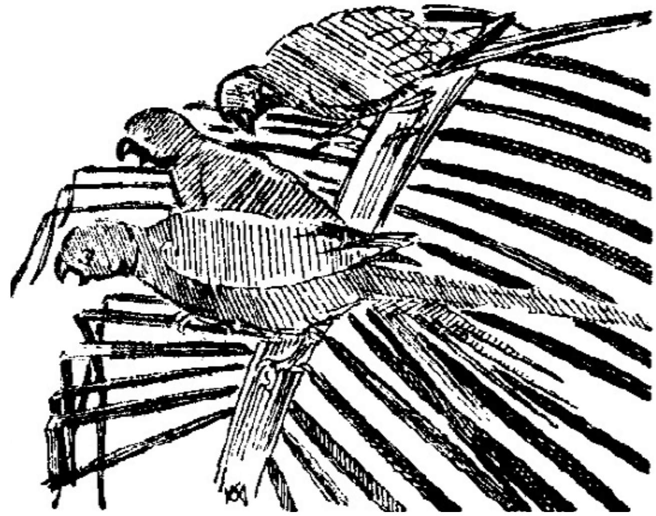
चिल्लाने को बर्दाश्त नहीं कर पाया और पत्तियों के पीछे से ज़मीन पर आ गया। दरअसल वह एक तीन-चौथाई विकसित युवा बोनट बन्दर (bonnet monkey) था, जिसकी आधी पूँछ ग़ायब थी, जो दौड़ते हुए पड़ोसी के परिसर को पार करके दीवार के ऊपर से होते हुए मेरे घर के पिछवाड़े के कोने में लगे एक लम्बे नारियल के पेड़ पर चढ़ गया। तुरन्त ही उन्मादी कौवे और तोते सामूहिक रूप से नारियल के पेड़ की ओर मुड़ गए। फिर अपने पूरे ज़ोर के साथ और भी अधिक उत्तेजित होकर उसके ख़िलाफ़ प्रदर्शन करने लगे।

यहाँ आस-पड़ोस में कोई बन्दर नहीं है। यह किसी बंजारों की टोली से भागा हुआ होगा। मेरे परिसर में लगे नारियल से लेकर विशाल बेल के पेड़ तक, वहाँ से नारियल के पेड़ों की क़तार

से होते हुए आम के पेड़ तक और अन्त में पश्चिमी पड़ोसियों की कंक्रीट की छतों तक, स्वयं को पत्तों में छिपाते हुए उस भगोड़े ने अपनी आधी-अधूरी आज़ादी ले ली, वह ज़मीन पर नहीं उतरा और पक्षी शोर मचाते हुए जहाँ-जहाँ वह जाता उसका पीछा करते रहे। जब वह उत्पीड़ित बन्दर हरे-भरे पेड़ों को छोड़कर घरों की छतों पर चढ़ गया और पश्चिम की ओर ग़ायब हो गया, जहाँ कोई पेड़ नहीं थे, तब जाकर उन पक्षियों ने उसे परेशान करना बन्द किया। सारा शोर एकदम से वैसे ही बन्द हो गया, जैसे लगभग आधे घण्टे पहले अचानक शुरू हुआ था।

प्रथम दृष्टया यह सब मामूली बात लग सकती है और शायद ही दर्ज करने लायक लगे, लेकिन मुझे लगता है कि यह घटना प्रकृतिवादियों के लिए ग़ैर-रुचिकर नहीं है। पहली बात तो कि यह पहली बार था जब मैंने तोतों को बन्दर या किसी अन्य प्राणी पर इस प्रकार प्रदर्शन करते देखा था। मुझे लगता है कि देवर (Dewar) ने लाल चोंच वाले तोते के अपने बसेरे पर घबराने की एक घटना का उल्लेख किया है, जब एक बाज़ उनमें से एक तोते को ले गया था; लेकिन यह मामला कुछ अलग था। हालाँकि वहाँ बहुत सारे कौवे थे लेकिन तोते की अलग-अलग आवाज़ों ने उनकी काँव-काँव को लगभग दबा दिया था और तोतों के मुक़ाबले में कौवे उस चिल्लम-चिल्ली में आधे-अधूरे मन से शोर करने वाले लग रहे थे। वे बस पड़ोसी बसेरे से बन्दर के पेड़ तक उड़े और फिर वापस आ गए। लेकिन प्रत्येक तोता बैठने से पहले, पंखों को ताने हुए पेड़ के चारों ओर चक्कर लगाता था, अपने हर लम्बे-चौड़े पूँछ-पंख को फैलाए हुए, दुखी मकाक (अफ़्रीकी लंगूरों) पर तीखी प्रतिक्रियाएँ देता था : वे अपने दुश्मन पर पत्तों के बीच से नज़र रखने के लिए क़तारों में बैठे थे, वे इतने उत्तेजित थे कि तने हुए उनके सिर उनकी पतली गर्दन पर असंगत रूप से बड़े लग रहे थे, वे चिल्ला रहे थे, उत्तेजना में अपने बैठने के स्थान से लगभग गिरे जा रहे थे।

मैं कल्पना नहीं कर सका कि ये पक्षी बन्दर से इतने परेशान क्यों थे। ग्रामीण इलाक़ों में जहाँ वनों में वे एक साथ रहते हैं, मैंने उन्हें कभी मकानों पर प्रदर्शन करते नहीं देखा। कोई भी बाहरी चीज़ किसी भी इलाक़े के पक्षियों को उत्तेजित कर देती है और निश्चित रूप से वह बन्दर उस परिवेश में बिल्कुल अजीब था, लेकिन यह तोतों के ग़ुस्से को स्पष्ट नहीं करता है। कौवे केवल एक सहायक शक्ति थे, जिन्हें तोतों द्वारा प्रदर्शन करने खींचा गया था। जैसा कि मैंने कहा, वे अपने विरोध में बहुत हल्के लग रहे थे।



मुख्य प्रदर्शनकारी।
Credits: M Krishnan. URL: https://www.mkrishnan.com/writings.html. License: Included here with permission from the rights owner–Asha Harikrishnan.

एक और उल्लेखनीय तथ्य कि वहाँ मौजूद बाक़ी अन्य प्राणी इसके प्रति पूरी तरह उदासीन थे। मैंने देखा कि मेरे परिसर की असंख्य गिलहरियाँ और उसी समय वहाँ मौजूद सफ़ेद सिर वाले बैबलर (babbler) के एक झुण्ड ने बन्दर और उसके उत्पीड़कों को पूरी तरह से नज़रअन्दाज़ किया। जबकि पाम गिलहरियाँ और सफ़ेद सिर वाले बैबलर तोतों की तुलना में दुश्मनों और घुसपैठियों के ख़िलाफ़ प्रदर्शन करने के लिए अधिक कुख्यात हैं, लेकिन उन्होंने इस शोर-शराबे के प्रति कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई।

इससे भी अधिक उल्लेखनीय मानव आबादी की उदासीनता थी। बन्दर जब नारियल के एक पेड़ से दूसरे पेड़ के ऊपर छलाँग लगा रहा था, तब एक माली के बच्चे ने यूँ ही एक छोटा पत्थर उस पर फेंका। लेकिन यह एक विशुद्ध रूप से औपचारिक चेष्टा थी जो भगोड़े प्राणियों पर चीजें फेंकने के कुछ पुराने तरीक़े से प्रेरित था। इसे करने के बाद बच्चे ने बन्दर पर कोई ध्यान नहीं दिया। पेड़ और हवा में होने वाली हलचल का किसी और को अन्दाज़ा भी नहीं लग रहा था। मेरा एक पड़ोसी खिड़की पर बैठा दाढ़ी बना रहा था वह उठ खड़ा हुआ। मुझे उम्मीद थी कि वह अपनी छत पर जाएगा और देखेगा कि यह सब क्या था। लेकिन वह केवल अपना तौलिया लेकर वापस आ गया और टायलेट में तैयार होने चला गया।

टिप्पणियाँ :

1. यह लेख पहली बार रविवार, 21 अप्रैल, 1951 को कलकत्ता के ‘द स्टेट्समैन’ के पाक्षिक कॉलम *कंट्री नोटबुक* में प्रकाशित हुआ था। इसे आशा हरिकृष्णन, जिनके पास एम. कृष्णन के सभी कार्यों के कॉपीराइट हैं, की अनुमति से यहाँ पुनः प्रस्तुत किया गया है। एम. कृष्णन द्वारा लिखे गए अन्य लेखों के डिजिटाइज्ड संस्करण यहाँ देखे जा सकते हैं: https://www. mkrishnan.com/writings.html।
2. एम. कृष्णन के बारे में अधिक पढ़ने के लिए, इस अंक के पृष्ठ-4 पर वरुण शर्मा द्वारा ‘प्रकृति का भावुक और सूक्ष्म क्रॉनिकलर’ नामक उनकी जीवनी देखें।
3. क्या आप सोच रहे हैं कि देवर कौन है? डगलस देवर (1875-1957) एक ब्रिटिश सिविल सेवक और एक पक्षी विज्ञानी थे जिन्होंने भारतीय पक्षियों और वन्यजीवों पर बड़े पैमाने पर लिखा था। उनकी पुस्तकों में शामिल हैं : ‘Jungle folk’, ‘Indian natural history sketches’, ‘Animals of no importance’, ‘Glimpses of Indian birds’ और ‘The Indian crow, his book’। आप इन्हें और कई अन्य को बायोडायवर्सिटी हेरिटेज लाइब्रेरी से प्राप्त कर सकते हैं : https://www.biodiversitylibrary.org/search?searchTerm=Douglas+Dewar&stype=F#/titles।
4. यदि आप भी हमारी तरह इस छोटे अंश में दिखाई देने वाले कई पात्रों से मोहित हैं, तो इस अंक के पृष्ठ-49 पर जाएँ।
5. लेख की पृष्ठभूमि में उपयोग किए जाने वाले चित्र का स्रोत : Jigsaw pieces. Credits : Wounds_and_Cracks, Pixabay. URL : https://pixabay.com/ photos/puzzle-piece-tile-jig-jigsaw-game-3306859/. License : CC0.



माधवैया कृष्णन जिन्हें मुख्यतः एम. कृष्णन के रूप में जाना जाता है, एक अग्रणी भारतीय वन्य जीवन फोटोग्राफ़र, प्रकृतिवादी और लेखक थे।

अनुवाद : जितेन्द्र ‘जीत’ **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय



कृष्णन के पात्रों से परिचय

चित्रा रवि

एम. कृष्णन के लेख 'असहिष्णुता के स्वर' में हम उनके कुछ सबसे दिलचस्प पड़ोसियों से मिलते हैं।

हम उनके पात्रों की एक झलक उनके लेख के एक अन्य अंश - 'कृष्णन के पात्र' में देखते हैं। इसमें 'कृष्णन के पात्र' हैं (b) कैसिया (Cassia) के पत्ते; (c) पीली चोंच वाला बैबलर (Yellow-billed babbler), जिसे कृष्णन सफ़ेद सिर वाला बैबलर कहते हैं; (d) पाम गिलहरी की पूँछ (Palm squirrel tail); (g) आम का बौर (फूल) (Mango flower); (h) लाल चोंच वाले तोते (पैराकीट, Rose-ringed parakeet); और (l) घरेलू कौवे (house crow) की चोंच और सिर।

सोचने के लिए कुछ प्रश्न :

प्रश्न 1 : कृष्णन के कौन-से पड़ोसी आपके भी पड़ोसी हैं? आप इनमें से कितनों को पहचान पाए?

प्रश्न 2 : कृष्णन के किन पड़ोसियों को आप नहीं पहचान पाए? और क्यों?

प्रश्न 3 : आपने देखा होगा कि 'कृष्णन के पात्र/ लेख में कृष्णन के हर एक पड़ोसी से मिलता-जुलता भ्रामक चित्र दिया गया है। ये अन्य (या सम्बन्धित) पौधे और पक्षी आपके पड़ोसी हो सकते हैं या नहीं भी हो सकते हैं, लेकिन किसी तरह से कृष्णन के पड़ोसियों से सम्बन्धित हैं। क्या आप उनमें से किसी को पहचानते हैं? क्या आपने उनमें से किसी को अपने पड़ोस में देखा है?

प्रश्न 4 : कृष्णन ने अपनी कहानी में एक बड़े उल्लू, एक बाज और एक नारियल के पेड़ का भी उल्लेख किया है। घटना में वे पहले दो के होने के बारे में अटकल लगाते हैं, लेकिन निकलता कोई तीसरा है। यदि आपको पहेली में नारियल के पेड़ की एक विशेषता जोड़ने के लिए कहा जाता तो आप किस विशेषता को जोड़ते और क्यों? और उससे मिलते-जुलते भ्रामक चित्र के लिए किसे चुनेंगे?

प्रश्न 5 : कृष्णन हमसे अपने पड़ोस में पौधों और जानवरों को अधिक बारीक़ी से देखने का आग्रह करते हैं - न केवल उनकी शारीरिक विशेषताओं पर बल्कि इस पर भी कि वे कैसे व्यवहार करते हैं और उनकी भावनात्मक स्थितियाँ क्या हैं। क्या आपने अपने पड़ोस में कभी इसी तरह का प्रदर्शन देखा है? कौन भटककर आया था? आपने किन जानवरों को विरोध करते देखा? घुसपैठिए की उपस्थिति को बताने के लिए उन्होंने किन संकेतों का (उदाहरण के लिए, उन्होंने क्या ध्वनियाँ निकाली) उपयोग किया? आपको क्या लगता है कि वे किन्हें बता रहे थे और क्यों? कृष्णन ने जो प्रदर्शन देखा उससे यह प्रदर्शन कितना अलग था (उदाहरण के लिए, पात्रों या चरित्र और प्रदर्शन में उनकी भूमिकाएँ)? क्या आपने इस प्रदर्शन में किसी भी भाव को महसूस किया?



नारियल के पेड़ की कौन-सी विशेषता आप चुनेंगे?

टिप्पणियाँ :

1. एम. कृष्णन के 'असहिष्णुता के स्वर' शीर्षक लेख को पढ़ने के लिए इस अंक के पृष्ठ-21 पर जाएँ।
2. 'कृष्णन के पात्र' लेख को फिर से देखने के लिए पृष्ठ-49 पर जाएँ।
3. एम. कृष्णन के बारे में अधिक पढ़ने के लिए पृष्ठ-4 पर वरुण शर्मा द्वारा प्रस्तुत उनकी जीवनी 'प्रकृति का भावुक और सूक्ष्म क्रॉनिकलर' देखें।
4. Source of the image used in the background of the article title: Jigsaw pieces. Credits: Wounds_and_Cracks, Pixabay. URL: https://pixabay.com/photos/puzzle-piece-tile-jig-jigsaw-game-3306859/. License: CC0.
5. Sources of the images used in the visual puzzle in the Snippet 'Krishnan's Cast':

- Alexandrine parakeet. Credits: Charlesjsharp from Sharp Photography, sharpphotography.co.uk, Wikimedia Commons. URL: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Alexandrine_parakeet_(Psittacula_eupatria_eupatria)_male.jpg. License: CC-BY-SA.
- *Cassia fistula leaves*. Credits: bowonpat, freepik. URL: https://www.freepik.com/premium-photo/golden-shower-cassia-fistula-flower-leaves-white-background_25922640.htm.
- Yellow-billed babbler. Credits: Dharani Prakash, Wikimedia Commons. URL: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Yellow-billed_Babbler_(Turdoides_affinis)_by_Dharani_Prakash.jpg. License: CC-BY-SA.
- Palm squirrel tail. Credits: Hari K Patibanda. URL: https://www.flickr.com/photos/krishnacolor/51400366812/. License: CC-BY.
- Malabar giant squirrel tail. Credits: Brian Scott. URL: https://www.flickr.com/photos/brianscottgb/49552998332/. License: CC-BY-ND.
- Indian jungle crow beak. Credits: J. M. Garg, Wikimedia Commons. URL: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Indian_Jungle_Crow_I3-Bharatpur_IMG_8466.jpg. License: CC-BY-SA.
- Mango flower. Credits: mr_tentacle. URL: https://www.flickr.com/photos/mr_tentacle/212641723/. License: CC-BY-NC-ND.
- Rose-ringed parakeet. Credits: Charlesjsharp from Sharp Photography, sharpphotography.co.uk, Wikimedia Commons. URL: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Rose-ringed_parakeet_(Psittacula_krameri_manillensis).jpg. License: CC-BY-SA.
- Jungle babbler. Credits: Fitindia, Wikimedia Commons. URL: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Jungle_babbler_2.jpg. License: CC-BY-SA.
- Tamarind flowers. Credits: Ton Rulkens from Mozambique, Wikimedia Commons. URL: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Tamarind_flowers.jpg. License: CC-BY-SA.
- *Delonix regia* leaves. Credits: Yash raina, Wikimedia Commons. URL: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Gulmohar_%28Delonix_regia%29_leaves.jpg. License: CC-BY-SA.
- House crow beak. Credits: Timothy A. Gonsalves, Wikimedia Commons. URL: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:House_Crow_Sandynullah_Ooty_Aug21_D72_20420.jpg. License: CC-BY-SA.

चित्रा रवि अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में कार्यरत हैं।

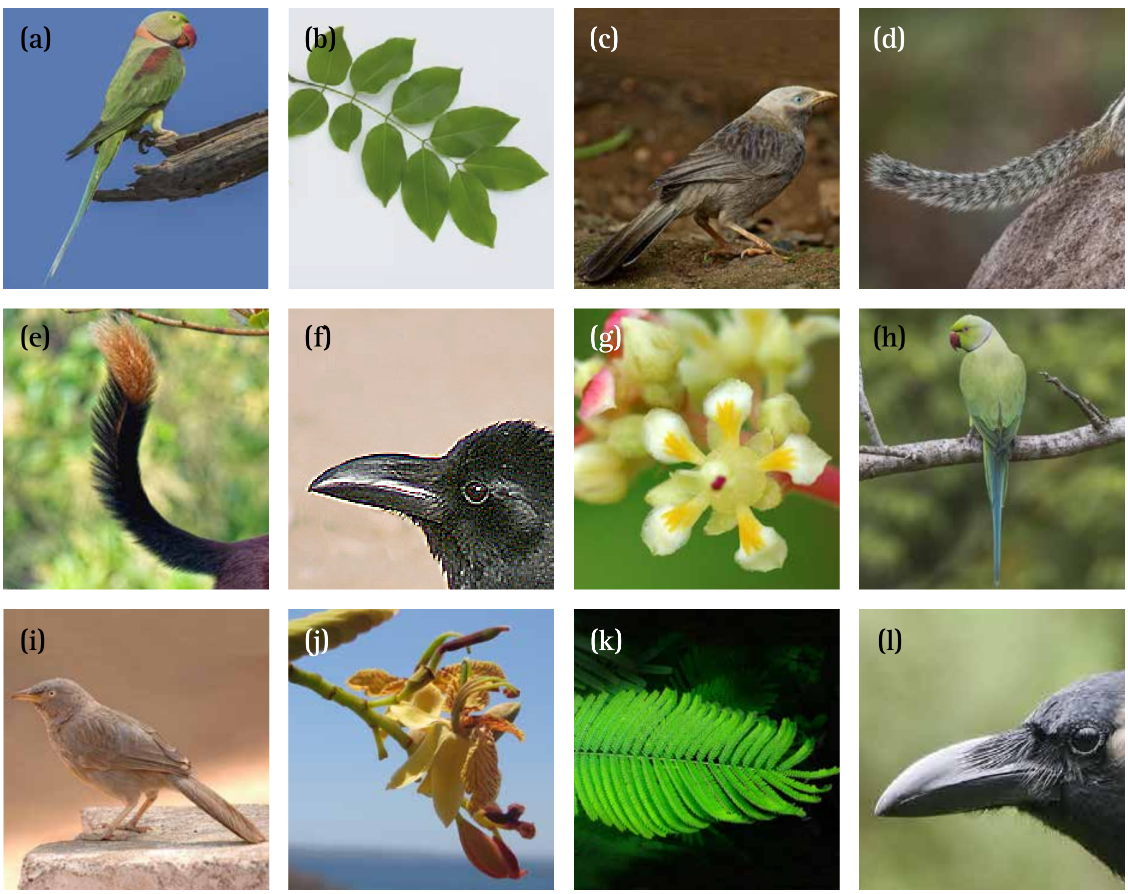
अनुवाद : जितेन्द्र 'जीत' **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय



कृष्णान के पात्र

चित्रा रवि

एम. कृष्णन के लेख 'असहिष्णुता के स्वर' में हम उनके कुछ सबसे दिलचस्प पड़ोसियों से मिलते हैं। उनके लेखन ने उनके पड़ोसियों को जीवन्त कर दिया है। कुछ वैसे ही जैसे उन्होंने अपने आप को थोड़ा (या बहुत ज़्यादा) हमारी कल्पनाओं में और इस पृष्ठ पर छोड़ दिया हो। क्या आप पहचान सकते हैं कि इनमें से कौन-कौन उनके पात्रों या कलाकारों से सम्बन्धित है?



टिप्पणियाँ :

1. एम. कृष्णन के 'असहिष्णुता के स्वर' शीर्षक लेख को पढ़ने के लिए इस अंक के पृष्ठ-21 पर जाएँ।
2. एम. कृष्णन के बारे में अधिक पढ़ने के लिए, पृष्ठ-4 पर वरुण शर्मा द्वारा प्रस्तुत उनकी जीवनी 'प्रकृति का भावुक और सूक्ष्म क्रॉनिकलर' देखें।
3. यदि आपने इसे पूरा कर लिया है और अपने उत्तरों की जाँच करना चाहते हैं, तो कृपया पृष्ठ-54 पर जाएँ।
4. इस लेख की पृष्ठभूमि में उपयोग किए गए चित्र का स्रोत : Jigsaw pieces. Credits : Wounds_and_Cracks, Pixabay. URL : https:// pixabay.com/photos/puzzle-piece-tile-jig-jigsaw-game-3306859/. License: CC0.

चित्रा रवि अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में कार्यरत हैं।
अनुवाद : जितेन्द्र 'जीत'